International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-1
February- 2015
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

समाजिक –आर्थिक स्तर के आधार पर छात्र–छात्राओं की कुण्ठा का अध्ययन

डॉ मनोज झाझडिया
प्रचार्य, कानोडिया बी.एड.कॉलेज
मुकुन्दगढ
झुंझुनूं (राजस्थान)

प्रस्तावना

विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। बालक के विकास में अंगों के साथ–साथ शारीरिक, सामाजिक, सांवेगिक अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तन भी सम्मिलित होते हैं। अतः बालक के व्यक्तित्व का विकास करने के लिये व्यक्तित्व के समस्त पहलू :– रूचि, आदतें, आकांक्षाएँ, स्वधारणा, समायोजन आदि का सकारात्मक विकास आवश्यक है।

एक बालक के निर्माण में उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित कारक प्रभावकारी बिन्दुओं के रूप में उपस्थित होते है। अलग–अलग सामाजिक तथा आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, स्वभाव, मानसिकता आदि में स्पष्टतः भिन्नता उपस्थित रहती है। इन्हीं विभिन्नताओं के फलस्वरूप वह दबाव, नैराश्य, कुण्ठा आदि अनुभव करने लगता है और कुसमायोजित हो जाता है। अधिकांश उच्च आय वर्ग के बालक विद्यालय स्तर पर अध्ययन करते समय विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में अध्ययन करने हेतु विचार करने लगते है तथा अपनी रूचि के व्यवसाय में प्रविष्ट होने का प्रयास करते है, जबकि दूसरी ओर निम्न आय वर्ग से संबंधित बालक जल्द ही नौकरी प्राप्त करना चाहते है तथा उनका परिवार भी आय से अधिक अर्थ अर्जित करने का विचार करते है। वे यह भी विचार करते हो कि किसी भी प्रकार की गम्भीर दुर्घटना के बिना किसी कार्य में पारंगत हो जायें तथा नौकरी प्राप्त कर ले। साधारणतः निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के समूह के बालक अपने शहर या कस्बे को नया व्यवसाय प्राप्त करने के लिये छोड़ना पसन्द नहीं करते हो। इसके पीछे मूल कारण है परिवार की स्थिति एवं उस बालक की प्राप्त शिक्षा व उस शिक्षा की अहमियत।

अच्छे परिवार के अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर से युक्त परिवार के बालकों में अच्छी आदतें एवं परम्पराएँ स्वतः ही उत्पन्न होने लगती है। वे व्यवहार कुशल, सद्भावनापूर्ण, उच्च शैक्षिक उपलब्धि के धनी, सहकारिता, सुसमायोजन की भावनाओं से परिपूर्ण होते है। लेकिन यदि परिवार की परिस्थिति इसके विपरीत हों तो उनमें अनेक दोष, जैसे – कुसमायोजन, दुश्चिंता, बुरी आदतों का आविर्भाव, आत्मसंबोध में कमी, निर्णय लेने में असमर्थता आदि उत्पन्न होने लगते हो। इसका सीधा प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है, जिससे बालक अपने मुख्य पथ से हटकर अलग ही राह का राहगीर बन जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व –

वर्तमान परिपेक्ष्य में शिक्षा और अर्थ का परस्पर अवियोजनीय संबंध और शिक्षा एवं अर्थ का सामाजिक स्तर तय करने में भूमिका हालात को और भयावह बनाती है। बालक अपने पारिवारिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करता हुआ अपनी शक्तियों एवं दुर्बलताओं का प्रत्याभिज्ञान करता है। आर्थिक स्थिति उसके जीवन के विभिन्न आयामों को तय करती है, जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से उसकी मानसिकता पर पड़ता है।

अतः उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में शोधकर्त्री द्वारा यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि क्या विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्र–छात्राओं में कुण्ठा की भावना पाई जाती है, और अगर पाई जाती है तो इसका स्तर कितना है? साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया जा रहा है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर का छात्र–छात्राओं के कुठित होने अथवा नहीं होने में कितना योगदान है, या प्रभाव पड़ता है?

समस्या अभिकथन

"सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर छात्र–छात्राओं की कुण्ठा का अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
2. छात्र–छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं ळें
2. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली

सामाजिक–आर्थिक स्तर

सामाजिक–आर्थिक स्तर किसी व्यक्ति विशेष की समाज में स्थिति जिसमें वह निवास करता है, बतलाता है। यह व्यक्ति की समाज में इज्जत, सम्मान, प्रभाव और विशिष्ट स्थिति को प्रकट करता है।

कुप्पुस्वामी के अनुसार – "सामाजिक–आर्थिक स्तर से तात्पर्य यह है कि समाज में व्यक्ति का आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से क्या स्थान है। इसके अन्तर्गत मुख्यतः तीन बातों को लिया गया है – व्यक्ति का व्यवसाय, शिक्षा एवं आय।"

कुण्ठा

कुण्ठा व्यक्ति की वह मानसिक स्थिति और भावात्मक दशा है जो उसे अनेक अवरोध और परस्पर विरोध विकल्पों का सामना करने पर प्राप्त होती है। एक विद्वान के अनुसार, "कुण्ठा वह तीव्र अनुभूति है जो व्यक्ति को असफल होने पर या असंतुष्ट होने पर होती है।"

गुड के अनुसार, "कुण्ठा का अर्थ है – किसी इच्छा या आवश्यकता में बाधा पड़ने से उत्पन्न होने वाला संवेगात्मक तनाव।"

अध्ययन की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले के केवल राजकीय विद्यालयों को ही ऑकड़ों के संकलन हेतु चुना गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर शहर के बाईस गोदाम, चाँदपोल, दिल्ली बाईपास एवं सांगानेर क्षेत्रों का सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के केवल 9वीं कक्षा के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 160 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

अतीत में किये गये शोध और विचारों को नवीनतम शोध और विचारों से जोड़ने की प्रक्रिया द्वारा हम ज्ञान को आगे बढ़ाते हो। इस प्रक्रिया के लिये सफलतापूर्वक कार्य करने हेतु प्रत्येक शोधार्थी के लिये अतीत को जानना आवश्यक है जिससे कि जिस विषयवस्तु पर शोध कार्य नहीं हुआ है, उसका अध्ययन किया जा सके।

अतः संबंधित साहित्य का अध्ययन शोधकार्य की आधारशिला है। यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं करते हो तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना है।

मुलिया, आर.डी. (1986) – "एन इन्वेस्टिगेशन इन टू दी लीडरशिप बिहेवियर ऑफ स्टूडेन्ट्स इन दी कॉन्टेक्ट्स ऑफ समफिजियो सोशियो फैक्टर्स।"

उद्देश्य –

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके नेतृत्व व्यवहार से संबंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष –

(1) छात्रों के परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं नेतृत्व व्यवहार में कोई संबंध नहीं है।

(2) अन्तर्मुखी की अपेक्षा बहिर्मुखी व्यक्तित्व रखने वाले छात्रों के नेतृत्व व्यवहार का स्तर सार्थक रूप से उच्च है।

शर्मा, धीरज (2011) – "परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं विद्यालय प्रकार का किशोरा□की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन व दुश्चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

उद्देश्य

(अ) किशोरों के परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं विद्यालय प्रकार का उनकी शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन व दुश्चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(ब) किशोरों के परिवार के समाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन व दुश्चिंता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

(1) सरकारी व निजी विद्यालय के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले किशोरों के समायोजन में विभिन्नताएँ नहीं पायी गई।
(2) सरकारी व निजी विद्यालय के सामान्य सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले किशोरों के समायोजन स्तर में भिन्नताएँ होती हो।
(3) सरकारी व निजी विद्यालय के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले किशोरों के समायोजन स्तर में भिन्नताएँ पायी गई।
(4) सरकारी व निजी विद्यालय के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले किशोरों की दुश्चिंता में विभिन्नताएँ नहीं पायी गई।
(5) सरकारी व निजी विद्यालय के सामान्य सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले किशोरों की दुश्चिंता में भिन्नताएँ होती हो।
(6) सरकारी व निजी विद्यालय के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले किशोरों की दुश्चिंता में भिन्नताएँ पायी गई।

ब्रास्को अध्ययन (1953) – रोजेन्ज्वाइन चित्र नैराश्य अध्ययन की वैधता ज्ञात करने हेतु लिंकन ने ब्रास्को विद्यालय में 16 वर्ष से निम्न आयु के 276 बालकों पर यह परीक्षण किया। 268 बालिकाएँ भी थीं। बालकों के चयन में शिक्षकों से साक्षात्कार प्रश्नावली के योग्य छात्रों का परीक्षण किया। अध्ययन के महत्त्वपूर्ण परिणाम निम्न रहे –

अ. चित्र नैराश्य के प्रत्युत्तर के आधार पर अंक दिये जा सकते हैं और इन अंकों के द्वारा विषयों के गुणों का वर्गीकरण किया जाता है।
ब. आयु के अनुसार छात्रों का वर्गीकरण उचित है, परन्तु सांख्यिकी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं होता है।
स. समस्यात्मक बालक समस्या रहित बालकों की अपेक्षा ज्यादा असहिष्णुता प्रदर्शित करते हैं।

लिण्डजे तथा गोल्डाइन्स स्टडी (1954) – वैलिडिटी ऑफ द रोजेन्ज्वाइन पिक्चर फ्रस्ट्रेशन स्टडी।
इस शोध में लिण्डजे तथा उसके साथी ने सामान्य तथा अपराधी बालकों के पी.एफ. परीक्षण के परिणामों की तुलना करके परीक्षण की वैधता जॉचने का प्रयास किया है तथा यह निष्कर्ष निकाला गया है कि पी.एफ. परीक्षण सामान्य तथा अपराधी बालकों में अन्तर स्थापित करने में असफल रहा है। उन्होंने इस परीक्षण की वैधता में आशंका प्रकट की है।

सक्सेना (2008–09) – ने अपने शोध में कार्यरत महिलाओं एवं घरेलू महिलाओं के नैराश्य का अध्ययन कर निष्कर्ष में पाया कि कार्यरत महिलाओं का नैराश्य सतर, घरेलू महिलाओं के नैराश्य स्तर से अधिक होता है। भग्नाशा की स्थिति में शिक्षित कार्यरत महिलाओं की अपेक्षा शिक्षित घरेलू महिलाएँ अपने आस–पास की परिस्थितियों में कम रूचि रखती हैं, अकेले रहना चाहती हैं, अपनी आवश्यकताओं में अधिक कटौती करती हैं और भविष्य के कार्यक्रमों के विषय में कम सोचती हैं।

अध्ययन का प्रारूप

(1) शोध विधि

शोधकर्त्री ने अपने शोध कार्य के लिये सर्वेक्षण विधि को आधार बनाया है।

(2) चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर अग्रांकित है –

1. **स्वतंत्र चर** – सामाजिक–आर्थिक स्तर
2. **आश्रित चर** – कुण्ठा

(3) न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के 160 विद्यार्थियों (80 छात्र + 80 छात्रा) का चयन किया गया है।

(4) प्रयुक्त उपकरण

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण निम्न है –

- **सामाजिक–आर्थिक स्तर हेतु** – डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय एवं डॉ. अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित मापनी।
- **कुण्ठा मापनी** – डॉ. बी.एम. दीक्षित एवं डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मापनी।

(5) सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित परीक्षणों का विधिवत् प्रशासन करके विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्रयुक्त की जाने वाली सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण,जेड परीक्षण है।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या –
शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध को परिकल्पनाओं के अनुसार विश्लेषित करने के लिये निम्नानुसार सारणियों में वर्गीकृत किया है–

परिकल्पना – 1
छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 1

स्मूह	उच्च	निम्न	कुल
छात्र	32	48	80
छात्राएं	38	42	80
कुलः	70	90	160

व्याख्या व विश्लेषण –
उपरोक्त तालिका संख्या 1 छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर को स्पष्ट करती है। 160 छात्र–छात्राओं में से उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्र–छात्राओं की कुल संख्या 70 है, जिसमें छात्रों की संख्या 32 एवं छात्राओं की संख्या 38 है। इसी प्रकार निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्र–छात्राओं की कुल संख्या 90 है, जिसमें छात्रों की संख्या 48 एवं छात्राओं की संख्या 42 है।

अतः स्पष्ट होता है कि छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में भिन्नता है, जो उपर्युक्त दोनों श्रेणिया में परिलक्षित होती है।

परिकल्पना – 2
उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 2

समूह	संख्या छ	मध्यमान ड	प्रमाप विचलन `ण्क्ण	टी–मूल्य ;जद्ध	सार्थकता स्तर
छात्र	32	164.68	24.844	2.453	सार्थक
छात्रा	38	176.96	20.62		

व्याख्या व विश्लेषण –
उपरोक्त तालिका संख्या 2 उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा को दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कत्रि 68 का टी–तालिका मूल्य 0.05 स्तर पर 2.00 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 2.453 है, जो कि टी–तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से अधिक है, अतः निराकरणीय परिकल्पना "उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है", परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा में अन्तर पाया जाता है।
उपरोक्त तालिका के दोनों समूहों के मध्यमान क्रमशः 164.68 व 176.96 तथा प्रमाप विचलन 24.844 व 20.62 है। मध्यमानों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कुण्ठा के क्षेत्र आक्रामकता, निरस्तीकरण, नियतन तथा प्रतीपगमन में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राएं विभिन्नता रखते है।

परिकल्पना – 3
निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 3

समूह	संख्या छ	मध्यमान ड	प्रमाप विचलन ैण्क्ण	टी–मूल्य ;जद्ध	सार्थकता स्तर
छात्र	48	142.88	26.94	3.056	सार्थक
छात्रा	42	158.32	22.8		

व्याख्या व विश्लेषण –
उपरोक्त तालिका संख्या 3 निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा को दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कत्रि 88 का टी–तालिका मूल्य 0.05 स्तर पर 1.99 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 3.056 है, जो कि टी–तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से अधिक है, अतः निराकरणीय परिकल्पना "निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में

व्याप्त कुण्ठा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है",परिकल्ना अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा में अन्तर पाया जाता है।

उपरोक्त तालिका के दोनों समूहों के मध्यमान क्रमशः 142.88 व 158.32 तथा प्रमाप विचलन 26.94 व 22.8 है। मध्यमानों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कुण्ठा के क्षेत्र आक्रामकता, निरस्तीकरण, नियतन तथा प्रतीपगमन में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राएं विभिन्नता रखते है।

शोध के निष्कर्ष

उद्देश्यों के आधार पर शोधकर्त्री द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त किये गये, वे इस प्रकार हो –

1. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि आक्रामक होने अथवा टाल देने में, जवाब देने अथवा शांत रहने में, रीति–रिवाज तोड़ने अथवा पालन करने में, विरोधाभास अथवा नम्रता में, संघर्ष का सामना करने अथवा बचने में, शांत जीवन अथवा मौज–मस्ती में, उत्सवों से दूर रहने अथवा भाग लेने में, सामाजिकता निभाने अथवा दूर रहने में, पर–प्रपंच में पड़ने अथवा दूर रहने में, अपनी प्रभुत्ता मनवाने अथवा स्वयं को छिपाकर रखने में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राएँ विभिन्नता रखते है।
2. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि अपनी आदतों को यथावत रखने अथवा बदलने में, पुरानी बातों को याद रखने अथवा भूल जाने में, समय के साथ बदलने अथवा परिवर्तन में, अपने दृष्टिकोणों को स्थिर रखने अथवा बदलने में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राएँ समानता रखते हो।
3. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्याप्त कुण्ठा के आयाम नियतन का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि अपनी आदतों को यथावत रखने अथवा बदलने में, पुरानी बातों को याद रखने अथवा भूल जाने में, समय के साथ बदलने अथवा परिवर्तन में, अपने दृष्टिकोणों को स्थिर रखने अथवा बदलने में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राएँ समानता रखते है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. छात्रों को अधिक से अधिक पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेना चाहिए। जिससे वह नम्रता पूर्वक व्यवहार कर सकेंगे। तथा उन्हें पाठ्य–पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों जैसे महापुरूषों की जीवनीयां, वेद, धार्मिक पुस्तकें आदि का भी अध्ययन करना चाहिए।
2. छात्राएँ, छात्रों की अपेक्षा सामाजिकता से अधिक दूर रहती हैं, अतः विद्यार्थियों को विद्यालय की समस्त गतिविधियों में जैसे उत्सवों आदि में अधिक भाग लेना चाहिए तथा उन्हें अपने में निहित प्रतिभा को उजागर करने के प्रयास करने चाहिए।
3. छात्राएं, छात्रों की अपेक्षा दूसरों से परेशानियों में सहायता अधिक लेती हैं, अतः विद्यार्थियों को अपने से छोटे विद्यार्थियों से मित्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए। उनके साथ खेलकूद की गतिविधियों आदि में भाग लेना चाहिए। परेशानियों में अपने से छोटे विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए तथा अपने से बड़े विद्यार्थियों की सहायता लेने में हिचकिचाना नहीं चाहिए।
4. अभिभावकों को छात्र–छात्राओं साथ सहयोगी, स्नेहपूर्ण तथा मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए एवं समय–समय पर उन्हें सही दिशा–निर्देश देना चाहिए।
5. अध्यापकों व अध्यापिकाओं को विद्यार्थियों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए ताकि विद्यार्थी दबाव व कुण्ठा से मुक्त रहें।
6. समाज एवं देश को चाहिए कि वह समय–समय पर विद्यालयों का अवलोकन करे तथा विद्यालय का वातावरण स्वतंत्र एवं भय रहित रखे
7. ताकि बालक किसी प्रकार से कुण्ठित न हो और अपना सर्वांगीण विकास कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरोड़ा, रीता –"शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी", शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, 2005
2. अग्रवाल, डॉ. संध्या –"शिक्षा मनोविज्ञान", विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, संस्करण–2005
3. आहुजा, राम – "सामाजिक अनुसंधान", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007
4. अग्निहोत्री, आर. –"आधुनिक भारतीय शिक्षा संस्थाएँ और समाधान", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1987
5. बेस्ट जान डब्ल्यू. –"रिसर्च इन एजुकेशन", दिल्ली प्रिंटिंग्स हॉल प्रा. लि., 1963
6. भटनागर, ए.बी., मीनाक्षी, अनुराग –"शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान", आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, 2005
7. भटनागर, आर.पी. एवं अन्य –"शिक्षा अनुसंधान", इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
8. भटनागर, सुरेश –"अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार", इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 2005
9. भाग्य, निर्मला –"शिक्षा में मूल्यांकन के सिद्धांत और प्रविधियां", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
10. भार्गव, महेश –"आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन", हर प्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशन, आगरा, 1992
11. हैनरी ई. गैरेट –"शिक्षा व मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग", कल्याणी पब्लिशर्स, पंजाब
12. जायसवाल, डॉ. सीताराम –"शिक्षा मनोविज्ञान", न्यू बिल्डिंग्स, लखनऊ, 1970
13. कपिल, एच.के. –"अनुसंधान विधियाँ", एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा, संस्करण–1998
14. कपिल, एच.के. –"सांख्यिकी के मूल तत्व", एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा, संस्करण–2000
15. मंगल, एस.के. –"शिक्षा मनोविज्ञान", प्रिंटिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली, 2008
16. पाण्डे रामशुक्ल एवं गुप्ता, रमेश चन्द्र–"शिक्षा में मापन व मूल्यांकन", लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा
17. पाठक, पी.डी. –"शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2004
18. पचौरी, डॉ. गिरीश–"उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा", लायल बुक डिपो, मेरठ, 2003
19. राय, पारसनाथ –"अनुसंधान परिचय", अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2007
20. रायजादा, डॉ. बी.एस.–"शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1997
21. राय, पी.एन. –"अनुसंधान परिचय", लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 1997
22. सरीन एवं सरीन –"शैक्षिक अनुसंधान विधियां", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2007
23. शर्मा, आर.ए. –"शिक्षा अनुसंधान", इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2006
24. शर्मा, आर.ए. –"शिक्षा अनुसंधान", आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, 2000
25. शर्मा, सरोज –"उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा", श्याम प्रकाश, जयपुर, 2003
26. सुखिया, एस.पी. –"शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2002
27. श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. –"अनुसंधान विधियाँ", साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2006
28. सक्सेना, सरोज –"शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1992
29. सिंह, अरूण कुमार–"मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शोध में शोध विधियां", मोतीलाल बनारसीदास, बम्बई
30. शर्मा, आर.ए. –"शिक्षा अनुसंधान", सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, 2005
31. शर्मा, आर.एस. –"शोध प्रबन्ध लेखन", कमल बुक डिपो, मेरठ, 2004

जनरल्स और सर्वे –

1. इण्डियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्ट्स –जुलाई 1998, एन.सी.ई.आर.टी.,
2. जनरल ऑफ इण्डियन अकादमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी –जनवरी – जुलाई, 1996
3. इण्डियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्ट्स –वॉल्यूम ग्ग, नं. 4 फरवरी 2005 एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
4. फॉक्स, डी.टी.–दी रिसर्च प्रोसेस इन एजूकेशन, न्यूयार्क, 1969
5. बुच एम.बी.–ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, चतुर्थ वाल्यूम, 1992
6. बुच एम.बी.–ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, वॉल्यूम पंचम, 1994